ORIGINAL RESEARCH PAPER

Commerce

KEY WORDS:

ग्रामीण महिलाओं के सशक्त विकास में स्वयं सहायता समूह का योगदान व समूह का राजनीतिक महत्व

विमला देवी

शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

ABSTRACT

स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व नेतृत्व गुणों का विकास करने वाला सफल माध्यम बन गया है। स्वयं सहायता समूह एक आन्दोलन का रूप ले चुका है, महिलाऐं समूह से जुड़कर सामाजिक, आर्थिक रूप से वरन राजनीतिक रूप से भी सशक्त हो रही है। समूह की सदस्य बनने के बाद ग्रामीण महिलाओं के राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने की प्रवृत्ति बढी है वे न केवल मतदान करती है। अपितु स्थानीय चुनाव में प्रत्याशी के तौर पर खडी भी होती है। समूह के माध्यम से महिलाऐं अपनी पहचान बना रही है तथा गांव का विकास भी कर रही है। समूह के माध्यम से महिलाऐं संगठित होकर गांव में व्याप्त सामाजिक बुराईयों, जिसमें शराबखोरी मुख्य है, घरेलू हिंसा, लैंगिक भेद–भाव, भ्रूण हत्या, बाल–विवाह आदि बुराईयों का विरोध कर रही है, ये बुराईयां ग्रामीण क्षेत्रों में अब दूर भी हो रही है।

स्वयं सहायता समूहः–

स्वयं सहायता समूह एक सब के लिए, सब एक के लिए सिद्धान्त पर आधारित है। समूह एक सशक्त संगठनात्मक ईकाई है जहां समान उद्देश्यों वाले, समान सामाजिक, आर्थिक स्तर वाले व्यक्तियों का समूह स्वेच्छा से अपनी अल्प आय में से छोटी बचत शुरू करते है। सामान्यत स्वयं सहायता समूह में 10 से 20 सदस्य होते है। सदस्यों द्वारा जमा की गई इसी धनराशि में से वे प्रारम्भ में अपनी आवश्यकताओं के अनुसार ऋण लेनदेन करते है, फिर वे बैंको से सम्पर्क स्थापित करते है तथा उनसे ऋण प्राप्त करके आय अर्जन करने वाली गतिविधियों का संचालन करते है। ताकि एक समूह के रूप में इनकी आय में वृद्धि हो सके। समूह

के सदस्यों की नियमित बैठकें होती है जिसमें सामूहिक रूप से समस्याओं का विचार–विमर्श किया जाता है। प्रत्येक सदस्य को अपने विचार व्यक्त करने की छूट होती हैं। समूह में नि र्य सर्वसम्मति से लिये जाते हैं।

भारत के गुजरात राज्य में सुश्री इला भट्ट के नेतृत्व में 1974 में महिलाओं द्वारा संगठित स्वयं सहायता समूहों को सूक्ष्म वित प्रदान कर उन्हें उत्पादक गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है जो कि सूक्ष्म वित के क्षेत्र में सबसे पहला सफल प्रयास माना जाता है। बाद में बांग्लादेश में श्री मुहम्मद यूनूस में 1976 में सूक्ष्म वित को आधार बनाकर अनेक स्वयं सहायता समूहों का सृजन किया, जिसने गरीबी कम करने, महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं कई लघु एवं कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवन देने का कार्य किया, जिसके लिए मुहम्मद यूनूस को वर्ष 2005 में नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया जिसके बाद स्वयं सहायता समूह की अवधारणा व सूक्ष्म वित की अवधारणा को विश्व के अन्य विकासशील देशों ने भी अपनाया और समूह गरीबी दूर करने व उच्च जीवन स्तर पाने का एक सफल माध्यम बन गया।

महिला स्वयं सहायता समूह के गठन के पीछे प्रमुख उद्देश्यः–

- *महिलाओं को स्वयं सहायता समूह की आवश्यकता के प्रति अवगत कराना।*
- *समूह के प्रयास द्वारा महिलाऐं प रम्पराओं और रूढियों के दौर से उपजे तनाव से मुक्त हो सकेगी और अपनी आन्तरिक छिपी हुई योग्यताओं को बाहर निकाल सकेगी।*
- *समूह द्वारा ग्रामीण महिलाओं में बचत व ऋण दोनों तरह के बैंकिग कार्य कलापों को प्रोत्साहित करना।*
- *महिलाओं को अपने अधिकारों और दायित्वों के प्रति सजग करते हुये उनकी सोच में परिवर्तन लाने, आर्थिक गतिविधियों में उनकी अभिरूचि उत्पन्न कर उन्हें आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन की और अग्रसरित करने जैसे अहम् उद्देश्यों की पूर्ति हेतु।*
- *समाज में पुरूष व नारी के भेदभाव को खत्म करना व समानता लाना।*
- *महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा, स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता, पुरूषों का महिलाओं पर प्रभुत्व आदि समस्याओं को दूर करना और नारी की अस्मिता के विकास में आने वाले अवरोधों के खिलाफ एक सामाजिक चेतना जाग्रत करना।*
- *समूह के माध्यम से महिलाओं को संगठित करना, उनमें आत्मविश्वास जाग्रत कर उनकी क्षमताओं को विकसित करना।*

स्वयं सहायता समूह से महिला सशक्तिकरणः–

स्वयं सहायता समूह निर्माण का कार्य पिछले कुछ वर्षों बहुत तेजी से हो रहा है, जहॉ पर भी ईमानदारी से प्रयत्न किये गए है वहॉ इन प्रयासों को बहुत अधिक सफलता मिली है, कुछ परिणाम तो ऐसे निकले जिनका सकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है। इनमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक क्षेत्र मे प्रभाव महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से इन चारों क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के अभियान में उल्लेखनीय सफलता मिली है।

सामाजिक क्षेत्रः–

जब महिलाएं समूह की सदस्य बनती है तो वहॉ अलग–अलग विचारों वाली महिलाओं से मिलती है, उसे अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलता है तथा दूसरी महिलाओं के विचारों को जानने का अवसर भी प्राप्त होता है इससे इनका मनोबल बढता है। समूह के सम्पर्क में आने से महिलाऐं अपने उपर होने वाले अत्याचार, शोषण के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत आती है। दहेज बाल–विवाह, शराब, मृत्युभोज आदि कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाने की ताकत बढती है। सामाजिक क्षेत्र में सशक्त होने पर उनके जीवन स्तर में परिवर्तन आता है, उनके रहन–सहन, बोलचाल, उठने–बैठने का ढंग आदि गतिविधियों में बदलाव देखने को मिलता है।

आर्थिक क्षेत्रः–

स्वयं सहायता समूह महिलाओं को थोडा–थोडा पैसा बचाने योग्य बनाता है। इस बचत राशि का प्रयोग एक–दूसरे को ऋण देने के लिए किया जाता है। महिलाऐं परिवार की आवश्यकताओं के अनुसार समूह से ऋण लेती है, तथा आपातकालिन स्थिति में परिवार की ऋण लेकर मदद करती है। जिससे परिवार में भी महिलाओं को ज्यादा सम्मान दिया जाने लगता है। समूह से रोजगार प्राप्त कर महिलाऐं भी परिवार की आय व आर्थिक विकास में बराबर की भागीदार बनती जा रही है। महिलाऐं आत्मनिर्भर बनकर अपना, परिवार का, समाज का, गांव व देश के विकास में सहयोग दे रही है। आय में वृद्धि होने से जीवन में सुधार आता है। बचत करना, बैंक से लेन–देन करना, ऋण लेना, चुकाना एवं लेखा–जोखा रखने से आर्थिक स्वावलंबन बढता है।

आर्थिक क्षेत्रः–

स्वयं सहायता समूह महिलाओं को थोडा–थोडा पैसा बचाने योग्य बनाता है। इस बचत राशि का प्रयोग एक–दूसरे को ऋण देने के लिए किया जाता है। महिलाऐं परिवार की आवश्यकताओं के अनुसार समूह से ऋण लेती है, तथा आपातकालिन स्थिति में परिवार की ऋण लेकर मदद करती है। जिससे परिवार में भी महिलाओं को ज्यादा सम्मान दिया जाने लगता है। समूह से रोजगार प्राप्त कर महिलाऐं भी परिवार की आय व आर्थिक विकास में बराबर की भागीदार बनती जा रही है। महिलाऐं आत्मनिर्भर बनकर अपना, परिवार का, समाज का, गांव व देश के विकास में सहयोग दे रही है। आय में वृद्धि होने से जीवन में सुधार आता है। बचत करना, बैंक से लेन–देन करना, ऋण लेना, चुकाना एवं लेखा–जोखा रखने से आर्थिक स्वावलंबन बढता है।

राजनीतिक क्षेत्रः–

स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनने के बाद महिलाओं की अपनी पहचान बनती है। समूह महिलाओं को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहॉ वे अपने व्यक्तित्व, प्रतिभा, कौशल व क्षमताओं को विकसित करने का अवसर मिलता हैं। नेतृत्वगुणों का विकास होने से चुनाव लडने की हिम्मत आती है। उच्च पदों पर प्रतिनिधित्व करने अपनी मांगों को रखने, उन्हें मनवाने की ताकत बढती हैं। यह देखा गया है कि स्वयं सहायता समूहों के कारण सत्ता व विकास में महिलाओं की भागीदारी सम्भव हो पाई है। समूह सामाजिक, आर्थिक विकास के साथ–साथ राजनीतिक सशक्तिकरण के माध्यम बनते जा रहे है। इसके जरिए महिला समता और सामाजिक न्याय की एक नई संभावना तलाशी जा रही है।

शैक्षिक सशक्तिकरणः–

स्वयं सहायता समूहों के द्वारा आर्थिक सुधारों के पश्चात महिला साक्षरता बढाने के विशेष प्रयास किये जा रहे है। समूह ने मुक्त बालिका शिक्षा एवं महिलाओं से सम्बन्धित नवीन शिक्षा प्रणाली को दूर–दराज के अविकसित भागों में निवास कर रही महिलाओं तक पहुॅचाकर उन्हें इससे अवगत कराते है। ताकि ग्रामवासी इन योजनाओं का लाभ उठा सके अपने शिक्षा के अधिकार को प्राप्त कर सके। समूह ने नुक्कड़ नाटक एवं कठपूतली जैसे प्रचार माध्यमों से बताया कि बालक और बालिका दोनों को हर क्षेत्र में समान अधिकार है इनमें भेद–भाव नहीं करना चाहिए, शिक्षा दोनों को समान रूप से मिलनी चाहिए। शिक्षा के प्रति जागरूकता बढाने के लिए घर–घर जाकर शिक्षा का महत्व समझा रहा है। समूह द्वारा नव साक्षर महिलाओं के लिए मेंलों का आयोजन किया जाता है। जिससे महिलाओं में आत्मविश्वास, मनोबल की भावना का विकास होता है। बचपन से औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रही महिलाओं को पढना लिखना समूह द्वारा सिखाया जा रहा है।

स्वयं सहायता समूह का राजनीतिक महत्वः–

स्वयं सहायता समूह निर्माण का कार्य पिछले कुछ वर्षों बहुत तेजी से हो रहा है, जहॉ पर भी ईमानदारी से प्रयत्न किये गए है वहॉ इन प्रयासों को बहुत अधिक सफलता मिली है, कुछ परिणाम तो ऐसे निकले जिनका सकारात्मक प्रभाव देखा जा

सकता है। इनमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक क्षेत्र में प्रभाव महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से इन चारों क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के अभियान में उल्लेखनीय सफलता मिली है।

सामाजिक क्षेत्रः–

जब महिलाएें समूह की सदस्य बनती है तो वहाँ अलग–अलग विचारों वाली महिलाओं से मिलती है, उसे अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलता है तथा दूसरी महिलाओं के विचारों को जानने का अवसर भी प्राप्त होता है इससे इनका मनोबल बढता है। समूह के सम्पर्क में आने से महिलाऐं अपने उपर होने वाले अत्याचार, शोषण के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत आती है। दहेज बाल–विवाह, शराब, मृत्युभोज आदि कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाने की ताकत बढती है। सामाजिक क्षेत्र में सशक्त होने पर उनके जीवन स्तर में परिवर्तन आता है, उनके रहन–सहन, बोलचाल, उठने–बैठने का ठंग आदि गतिविधियों में बदलाव देखने को मिलता है।

आर्थिक क्षेत्रः–

स्वयं सहायता समूह महिलाओं को थोडा–थोडा पैसा बचाने योग्य बनाता है। इस बचत राशि का प्रयोग एक–दूसरे को ऋण देने के लिए किया जाता है। महिलाऐं परिवार की आवश्यकताओं के अनुसार समूह से ऋण लेती है, तथा आपातकालिन स्थिति में परिवार की ऋण लेकर मदद करती है। जिससे परिवार में भी महिलाओं को ज्यादा सम्मान दिया जाने लगता है। समूह से रोजगार प्राप्त कर महिलाऐं भी परिवार की आय व आर्थिक विकास में बराबर की भागीदार बनती जा रही है। महिलाऐं आत्मनिर्भर बनकर अपना, परिवार का, समाज का, गांव व देश के विकास में सहयोग दे रही है। आय में वृद्धि होने से जीवन में सुधार आता है। बचत करना, बैंक से लेन–देन करना, ऋण लेना, चुकाना एवं लेखा–जोखा रखने से आर्थिक स्वावलंबन बढता है।

राजनीतिक क्षेत्रः–

स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनने के बाद महिलाओं की अपनी पहचान बनती है। समूह महिलाओं को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ वे अपने व्यक्तित्व, प्रतिभा, कौशल व क्षमताओं को विकसित करने का अवसर मिलता हैं। नेतृत्व गुणों का विकास होने से चुनाव लडने की हिम्मत आती है। उच्च पदों पर प्रतिनिधित्व करने अपनी मांगों को रखने, उन्हें मनवाने की ताकत बढती हैं। यह देखा गया है कि स्वयं सहायता समूहों के कारण सत्ता व विकास में महिलाओं की भागीदारी सम्भव हो पाई है। समूह सामाजिक, आर्थिक विकास के साथ–साथ राजनीतिक सशक्तिकरण के माध्यम बनते जा रहे हैं। इसके जरिए महिला समता और सामाजिक न्याय की एक नई संभावना तलाशी जा रही है।

शैक्षिक सशक्तिकरणः–

स्वयं सहायता समूहों के द्वारा आर्थिक सुधारों के पश्चात महिला साक्षरता बढाने के विशेष प्रयास किये जा रहे है। समूह ने मुक्त बालिका शिक्षा एवं महिलाओं से सम्बन्धित नवीन शिक्षा प्रणाली को दूर–दराज के अविकसित भागों में निवास कर रही महिलाओं तक पहुँचाकर उन्हें इससे अवगत कराते है। ताकि ग्रामवासी इन योजनाओं का लाभ उठा सके अपने शिक्षा के अधिकार को प्राप्त कर सके। समूह ने नुक्कड. नाटक एवं कठपूतली जैसे प्रचार माध्यमों से बताया कि बालक और बालिका दोनों को हर क्षेत्र में समान अधिकार है इनमें भेद–भाव नहीं करना चाहिए, शिक्षा दोनों को समान रूप से मिलनी चाहिए। शिक्षा के प्रति जागरूकता बढाने के लिए घर–घर जाकर शिक्षा का महत्व समझा रहा है समूह द्वारा नव साक्षर महिलाओं के लिए मेलों का आयोजन किया जाता है। जिससे महिलाओं में आत्मविश्वास, मनोबल की भावना का विकास होता है। बचपन से औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रही महिलाओं को पढना लिखना समूह द्वारा सिखाया जा रहा है।

स्वयं सहायता समूह का राजनीतिक महत्वः–

ह सत्य है कि भारतीय राजनीति में पुरूषों का वर्चस्व रहा है तथा महिलाओं की भूमिका को नकारा गया है। । दशे ा की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं के राजनीतिक अधिकार पुरूषों के समान है लेकिन राजनीतिक भागीदारी में महिलाऐं पुरूषों से बहुत पिछे है। पंचायतों में 50 प्रतिशत आरक्षण मिल जाने स पंचायतो तक तो पहूँच गई ह लेकिन वहा भी इनकी सक्रिय, राजनीतिक सहभागिता नहीं दिखाई पडती। ऐसी स्थिति में स्वयं सहायता समूह महिलाओं को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ महिलाऐं आत्मनिर्भर बनकर, अपनी अभिव्यक्तिक क्षमताओं का विकास करने का मौका देता है। समूह में महिलाओं में नेतृत्व गुणों का विकास होता है, कई महिलाऐं चुनाव लडने से डरती थी, लेकिन स्वयं सहायता समूह से जुडने के बाद महिलाऐं चुनाव भी लड रही है और अपनी मांगों को रखने व उन्हें मनवाने की ताकत भी रखती है। समूह ने महिलाओं का घर की चारदीवारी से निकालकर पंचायत तक पहूँचाने का एक सफल माध्यम है। जा हर महिला को आत्मनिर्भर व स्वावलम्बी बनाता है तथा अपने अधिकारों व कृतव्यों के प्रति जागरूक बनाता है।

महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के विकास में बाधक तत्व :–

- अशिक्षा :–स्वयं सहायता समूह द्वारा महिला विकास में सबसे बडा बाधक तत्व निरक्षरता/अशिक्षा है। अशिक्षा की वजह से समूह संचालन में बाधा आती है। अशिक्षा ने महिलाओं को शोषण, अत्याचार, मारपीट, अपमान आदि कुरीतियो का शिकार बना दिया ह वे अपने व अपन अधिकारो के प्रति जागरूक ही नहीं है।

- महिलाओं की गतिशीलता पर सीमाएं :– पुरूष प्रधान समाज के कारण महिलाओं का जीवन प्रायः घर की चारदीवारी में ही सीमित होता है। घर के बाहर जाकर स्वय सहायता समूह की सदस्य बनन पर अनेक प्रतिबन्ध लगाय जाते ह महिलाओ द्वारा समूहो के रूप मे संगठित होने पर भी उन्हें अपने उद्यम को आगे बढाने के लिए बैंकर्स, गैर–सरकारी संगठनों, अपने उत्पादों के लिए मध्यस्थों इत्यादि से बातचित करनी होती है, जिसमें कई बार परिजनो द्वारा बाधाएँ डाली जाती ह महिलाऐ दरे –रात तक घर से बाहर काम नहीं कर सकती, ऐसे कई प्रतिबन्ध लगा दिये जाते है।

- **बैंकर्स का नकारात्मक रवैया** :– परम्परागत रूप से बैंको में पुरूष ग्राहक ही अधिक संख्या में होते है तथा महिलाऐं एक तरह से बैंकिग सेवाओं से वंचित रही है। जब महिलाऐं स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनती और ऋण इत्यादि के लिए बैंको से सम्पर्क करती है तो पूर्ण अनुभव के अभाव में उनके अन्दर जिज्ञाषाएं व शंकाएं अधिक होती है किन्तु बैंकर्स की तरफ से इस स्थिति के प्रति सकारात्मक व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार नहीं किया जाता है जिससे महिला समूहों का मनोबल कम होता हैं।

- **प्रशासनिक बाधाएँ** :– सरकारी संस्थाओं से सम्पर्क साधने में महिला समूहों को प्रशासनिक, रूढिताओं, जटिलताओं, भष्टाचार, रिश्वतखोरी, पुरूषवादी मानसिकता इत्यादि के कारण अनेक बाधाओं का सामना करना पडता है, जिससे सरकार द्वारा चलाई जा रही अनेक प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ महिला समूह नहीं उठा पाते हैं।

- **अनुभवहीन प्रबन्धन** :– अनुभवहीन अथवा अप्रशिक्षित लोगों के हाथों में जब समूह का संचालन चला जाता है तब कर्मचारी तन्त्र में कार्यों के प्रति उदासीनता रहती है, इस तरह का भाव लोगों को स्वयं सहायता समूह से जुडने को प्रेरित नहीं करता है।

स्वयं सहायता समूहों का महिलाओं के जीवन पर प्रभावः–

समूह द्वारा किये गये कार्यों से महिलाओं के जीवन में निम्न बदलाव देखे गये–

- **बचत की आदत का विकास** :– समूह की महिला सदस्य अपनी छोटी–छोटी राशि जमा करने की आदत बना लेती है और इससे उनके पास बडी बचत इकट्ठा हो जाती है, जो परिवार की आपातकालीन स्थिति में उनके काम आती है।

- **निर्णय लेने की क्षमता** :– महिलाऐं जब समूह की बैठकों में भाग लेने संचालन से इनमें स्वनिर्णय की क्षमताओं का विकास होता है। जिससे ये अपने परिवारिक जीवन से सम्बन्धित गतिविधियों पर भी स्वयं निर्णय लेने लग जाती है। पुरूषों की सहायता का इंतजार नहीं करती है अपने भविष्य का निर्धारण स्वयं करने लगती है।

- **आर्थिक आत्मनिर्भरता** :– स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाऐं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती है जिससे परिवार में उनकी स्थिति में सुधार होता है तथा अपने पुरे परिवार की जिम्मेदारी बखूबी निभा रही है। अध्ययनों से स्पष्ट है कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा के मामले कम होते है।

- **राजनीति में प्रवेश** :– समूह के प्रयासों से ग्र मीण महिलाओ मे नेतृत्व की भावना का विकास हुआ है। जिससे वे पंचायतों में मिले 50 प्रतिशत आरक्षण का लाभ उठाकर राजनीति में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त हुआ है। समूह के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं ने भी सत्ता के सुख का उपयोग किया है। महिलाओं ने कहा है कि राजनीति में भाग लेने में कोई बुराई नहीं है।

- **सामाजिक कुरीतियों के प्रति सजग** :– समूह से जुडने के बाद महिलाऐं सामाजिक कुचक्र/कुरीतियों के प्रति सजग हुई है। ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी, निरक्षरता, शोषण, तथा निम्न स्वास्थ्य स्तर का कुचक्र निरन्तर चलता रहता है। समूह के प्रयासों से महिलाऐं गांवों में शराब की दुकानें नहीं खोलने देती, बाल विवाह नहीं होन देती।

- **लोकतान्त्रिक प्रक्रियाओं में विश्वास** :– इन समूहों में सामान्यतया सभी सदस्य एक जसै ी सामाजिक आर्थिक प्रष्ठभूमि के होत है तथा इनकी कारवाई में लोकतान्त्रिक प्रविधियों को अपनाया जाता है जिससे महिलाओं का लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में विश्वास मजबूत होता है। इसका प्रभाव गांव में राजनीतिक संस्थाओं यथा ग्राम सभा, पंचायत इत्यादि पर भी पडता है। महिलाओं की अन्यों की विचारधारा को लोकतान्त्रिक तरीके से बदलने की क्षमता में अभिवृद्धि होती है।

महिलाओं के सशक्त विकास हेतु कुछ सुझावः–

महिलाऐं जनसंख्या के आधे भाग का प्रतिनिधित्व करती है फिर भी वे अपने आप को अबला मानती है अतः उन्हें अबला से सबला बनाना है इसके लिए उन्हें स्वयं प्रयास करने होंगे। हम भी महिलाओं को सशक्त करने के लिए प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से योगदान दे सकते है।

- **सार्थक शिक्षा का प्रबन्ध हो** :– शिक्षा से महिलाओं में आत्मविश्वास अपने अधिकारों के बारे में जागरूकता तथा अन्याय से लडन की नौ तिक शक्ति पैदा होती है। शिक्षा और जागरूकता के बढने पर ही महिलाऐं कानून द्वारा दी गई सुविधाओं का लाभ उठा सकती है इसलिए महिला शिक्षा के लिए विशेष उपाय करने की आवश्यकता है।

- **सामाजिक कुरीतियां समाप्त करने का प्रयास करना**:– समाज में अनगिनत कुरीतियों में बाल–विवाह, पर्दाप्रथा, विधवाओं के साथ अमानवीय व्यवहार, मृत्यूभोज, भ्रूहत्या इत्यादि सामाजिक कुरीतियां ह जो बदली जानी चाहिए। ये कुरीतियां

महिला विकास में बाधा न बने इसके उचित प्रयास करना आवश्यक है।

- **कौशल विकास से क्षमता बढाना:–** *स्वयं सहायता समूह में महिलाओं में काशै ाल क्षमता बढान` के लिए उन्हे ं समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि अपेक्षाकृत अधिक मजदूरी मिल सके। प्रशिक्षण देने के साथ–साथ सफल समूहों के सदस्यों के अनुभवों को प्रचारित व प्रसारित किया जाना चाहिए इससे नवाचार व उद्यमी कौशल को बढावा मिलेगा।*

- **स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाये:–** *महिलाओं को सबल बनाने में उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत है। यद्यपि सरकार ने स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रसार किया परन्तु अशिक्षा परम्परावादी दृष्टिकोण एवं जागरूकता की कमी के कारण आज भी मातृ–मृत्युदर लाखों में है। गांवों में भी महिलाओं के स्वास्थ्य हेतु विशेष प्रबन्ध करें।*

- **अधिकारियों व कर्मचारियों की जवाबदेही:–** *स्वयं सहायता समूह की प्रगति व उन्नति में संवाहक बनने के लिए उनसे जुडे अधिकारियों व कर्मचारियों की जवाबदेही सुनिश्चित की जानी चाहिए। ताकि समूह से अधिक से महिलाऐं जुड सके। बैंकिंग प्रक्रिया आसान होनी चाहिए, ताकि समूह के अशिक्षित सदस्य भी उससे लाभान्वित हो सकें।*

- **बैंकिंग प्रणाली सरल हों:–** *बैंकों से महिलाओं को वित्तीय लाभ प्राप्त करने में सबसे बडी रूकावटें रही है। इसलिए महिलाओं को साख उपलब्ध कराने की प्रक्रिया को और अधिक आसान व सरल बनाना चाहिये।*

सारांश:–

सार रूप में हम कह सकते है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे है क्योंकि इन समूहों में कार्य करने से उनके स्वाभिमान, गौरव व आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है। परिणामस्वरूप महिलाओं की क्षमताओं में बढोतरी होती है। आज भारत दुनिया भर में महिलाओं द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूहों के क्षेत्र में सर्वोपरी स्थान रखता है किन्तु हमारे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियां महिला समूहों की गतिशीलता, व्यवहार्यता व साध्यता में अनेक चुनौतियां खडी होती है। इन चुनौतियों को कम करन` मे ं महिला सगं ठनों, समाजसेवी संस्थाओं, गैर–सरकारी संगठनों, सरकारी एजेंसियों इत्यादि द्वारा कार्य किया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप महिला समूहों की सक्रियता व सामाजिक आर्थिक जीवन में भागीदारी व महिला सशक्तिकरण सच्चे मायनों में हो रहा हैं।

संदर्भ ग्रन्थ:–

1. *सौरभ, समीराय ष्सशक्त होती ग्रामीण महिलाऐंष कुरुक्षेत्र, जनवरी 2018, पृष्ठ–12*
2. *देवपुरा, प्रतापमलय ष्महिला सशक्तिकरणष कुरुक्षेत्र, मार्च 2005, पृष्ठ–24*
3. *चतुर्वेदी, प्रतिमाय (2014) विकसित समाज में महिला सशक्तिकरण की यर्थाथता, प्रकाशक–वाईकिंग बुक्स, जैन भवन, शान्ति नगर जयपुर पेजन. 73*
4. *सिंह, डॉ नरेन्द्रपालय ष्महिलाओं के विकास में सहायक स्वयं सहायता समूहष बैंकिंग चिंतन–अनुचिंतन, जनवरी–मार्च 2011 पृष्ठ–8*
5. *चौधरी, डॉ कृष्ण चन्द्रय ष्ग्रामीण युवा महिलाओं में उद्यमिता विकासष कुरुक्षेत्र, जनवरी 2019, पृष्ठ–47*
6. *सिंह, वी.कये 2006, वुमन एम्पावरमेंट थ्रु सेल्फ हेल्प ग्रुप्स (ैभ्ळै) अध्ययन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली पेज. न. 14*
7. *शर्मा, प्रज्ञा, (2001) महिला विकास और सशक्तिकरण आविष्कार पब्लिशर्स जयपुर पृ. 2*
8. *बेहरा, आशा रानीय (2006) औरत कल आज और कल कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, पृ. 13*